University of Technology

# परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 11, नवंबर 2025


| | | |
|---|---|---|
| प्रधान संरक्षक | - | श्रीमती मीनाक्षी सुराना |
| प्रमुख संरक्षक | - | डॉ. प्रेम सुराना |
| मुख्य संरक्षक | - | डॉ. अंशु सुराना |
| प्रेसिडेंट (कुलपति) | - | प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन |
| वरिष्ठ सलाहकार | - | प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल |
| प्रधान संपादक | - | प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी |
| संपादक | - | डॉ. प्रेम कुमार |
| सह-संपादक | - | प्रो. (डॉ.) मोनिका शर्मा, डॉ. भाग्यश्री खरे |
| खेल संपादक | - | श्री यश यादव |

## संपादकीय...

ज्ञान, सृजन और नवाचार के इस निरंतर विस्तृत होते क्षितिज में 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह 11वाँ अंक पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। हमारी भित्ति पत्रिका केवल समाचारों और गतिविधियों का संग्रह भर नहीं है, बल्कि यह हमारे परिसर की जीवंत धड़कन, उभरते विचारों की प्रतिध्वनि और रचनाकरों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। इस अंक की ख़ास बात यह है कि इसमें रचनाकरों की लेखन, कला और रचनात्मक सोच को पहले से कहीं अधिक स्थान दिया गया है। आज जब सूचनाओं की गति पहले से कहीं अधिक तेज़ है, तब सार्थक अभिव्यक्ति और सकारात्मक संवाद की आवश्यकता उतनी ही प्रबल है। हमारा प्रयास रहा है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' इस आवश्यकता को पूरा करते हुए एक ऐसा मंच बने, जहाँ लेखक निर्भीक होकर अपने विचारों को साझा कर सकें, चाहे वे शिक्षा से जुड़े हों, समाज से, विज्ञान से या संस्कृति से।

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तक-ज्ञान देना नहीं, बल्कि सोचने, समझने और आत्मनिर्भर बनने की क्षमता विकसित करना है। इस दिशा में हमारे विश्वविद्यालय-परिवार के सदस्यों के प्रयास सराहनीय हैं- चाहे वह अकादमिक उपलब्धियाँ हों, खेलकूद की सफ़लताएँ, सामुदायिक पहलें या तकनीकी नवाचार। इस अंक में उनके इन्हीं प्रयासों की झलक आपको विस्तृत रूप से देखने को मिलेगी। हमारे शिक्षकवर्ग और मार्गदर्शकों ने सदैव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी है। उनके निरंतर प्रोत्साहन से ही यह भित्ति पत्रिका अपनी गुणवत्तापूर्ण दिशा बनाए रख पाई है, साथ ही संपादकीय टीम के सभी सदस्यों का समर्पण और श्रम इस अंक को विशेष बनाते हैं। अंत में, हम सभी पाठकों से यही अपेक्षा करते हैं कि वे अपनी सक्रिय भागीदारी और सृजनात्मक योगदान से 'परिसर प्रतिध्वनि' की स्वर-लहरी को और अधिक समृद्ध करें। आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव ही हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। आइए, विचारों की इस यात्रा में साथ चलें और एक जीवंत, रचनात्मक और जागरूक परिसर के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ।

**डॉ. प्रेम कुमार**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

**नोट:** आप सभी से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें अवश्य दें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सके।

## प्रेसिडेंट(कुलपति) महोदया का संदेश ...

प्रिय विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं पाठकवृंद,

भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के 11वें अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। यह पत्रिका हमारे परिसर की सृजनात्मक ऊर्जा, ज्ञान-परंपरा और युवाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त मंच बन चुकी है। रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत विचार, लेखन, कला और नवीन दृष्टिकोण न केवल उनकी प्रतिभाओं का परिचय देते हैं, बल्कि हमारे संस्थान की समृद्ध शैक्षणिक संस्कृति को भी दृष्टिगोचर कराते हैं। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी पाठकों को प्रेरणा, उत्साह और नवीन चिंतन प्रदान करेगा। युवा मस्तिष्क जब रचनात्मकता और जिम्मेदारी के साथ मिलकर कार्य करता है, तो संस्थान की प्रगति के नए द्वार खुलते हैं। संपादकीय टीम, सहयोगी संकाय तथा सभी योगदानकर्ताओं को मैं विशेष बधाई देती हूँ, जिन्होंने इस अंक को उत्कृष्ट रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आप सभी इसी प्रकार ज्ञान, नैतिकता और नवाचार के मार्ग पर अग्रसर रहें, इसी कामना के साथ सादर शुभेच्छाएँ ...

**प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन**
प्रेसिडेंट(कुलपति)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

## कुलसचिव महोदय का संदेश ...

'परिसर प्रतिध्वनि' के ग्यारहवें अंक के प्रकाशन पर मैं सम्पूर्ण संपादकीय टीम, सहयोगी विद्यार्थियों तथा संकाय सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह भित्ति पत्रिका हमारे शैक्षणिक परिवेश की रचनात्मक ऊर्जा, विचारशीलता और संवाद की सुंदर परंपरा का प्रतीक है। हर नया अंक न केवल रचनाकारों की अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करता है, बल्कि यह बताता है कि हमारी युवा पीढ़ी किस प्रकार ज्ञान, कला, साहित्य और नवाचार के मार्ग पर निरंतर अग्रसर है। इस पत्रिका में प्रकाशित विविध रचनाएँ निश्चय ही पाठकों को प्रेरित करेंगी और नई दृष्टि प्रदान करेंगी। मुझे विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' की यह यात्रा इसी उत्साह, सहयोग और सृजनशीलता के साथ आगे बढ़ती रहेगी। आप सभी मिलकर संस्थान के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को समृद्ध करने में जो योगदान दे रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। मैं इस अंक की सफलता हेतु हार्दिक मंगलकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

**डॉ. अनूप शर्मा**
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

# Legal and Cyber Awareness Program

The School of Law, University of Technology, Jaipur organized a Legal and Cyber Awareness Program at Tutoli Village to promote awareness about legal rights, cyber safety, and social responsibility among students and the local community. Dr. Rashmi Jain, President, University of Technology, Jaipur, graced the occasion and addressed the gathering. In her motivational address, she emphasized the importance of legal education and social awareness in building a responsible and empowered society. She also discussed the career opportunities in various legal and allied fields and assured the university's continuous support for students' holistic growth and community engagement.

Dr. Monika Sharma, Dean, School of Law, enlightened the participants on legal rights and the key provisions of the POCSO Act, encouraging awareness of laws protecting children and ensuring justice for all. Dr. Vandana Thakur inspired the students and villagers with her motivational talk on Nasha Mukti (Addiction-Free Society), urging everyone to contribute to creating a healthy and drug-free community.

The Law students presented a powerful Nukkad Natak (street play) on the theme of Cyber Awareness, educating villagers about digital safety, online fraud prevention, and responsible internet use. Following this, the students of Special Education performed an impactful Nukkad Natak on Nasha Mukti, spreading a strong social message about the dangers of addiction and the importance of leading a healthy, disciplined life. The entire event was effectively organized and coordinated by Mr. Surendra Teterwal, ensuring smooth conduct and enthusiastic participation. As part of the NSS social activity under the supervision of Mr. Yash Yadav, students distributed chocolates among the villagers as a gesture of goodwill and community bonding. The program successfully combined legal education, social awareness, and public engagement, reflecting the University's vision and commitment to its motto- Empowering Society through Legal Knowledge.

लघुकथा

## ज्ञान का वृक्ष

आकाश को छूता हुआ ज्ञान का विशाल वृक्ष सैकड़ों, शाखा-प्रशाखाओं में चारों ओर फैला हुआ था। इस विशाल वृक्ष की लगभग हर शाख में अलग-अलग तरह के पंछी आकर विश्राम करते थे, इसलिए एक डाल के पंछियों को दूसरी डाल के पंछियों की बोली समझ में नहीं आती थी।

ज्ञान का वृक्ष कोलाहल से भरा हुआ था।

**डॉ. प्रेम कुमार**
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

# संत गुरु नानक देव जी की जयंती के पावन अवसर पर कार्यक्रम हुआ आयोजित

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विभाग की ओर से दिनांक 06 नवंबर 2025 को संत गुरु नानक देव जी की जयंती बड़े ही श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के सभी संकाय सदस्य, विद्यार्थी एवं प्रशासनिक अधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. प्रेम कुमार के कुशल संचालन से हुआ। उन्होंने गुरु नानक देव जी के जीवन, उनके उपदेशों और मानवता के प्रति उनके योगदान का संक्षिप्त परिचय देते हुए कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। इसके पश्चात विभागाध्यक्ष डॉ. सीता राम माली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु नानक देव जी का जीवन सत्य, समानता और प्रेम का प्रतीक रहा है। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, भेदभाव और असमानताओं के विरुद्ध आवाज उठाई और "एक ओंकार सतनाम" के सिद्धांत के माध्यम से मानवता की सेवा को सर्वोपरि बताया। कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में कहा कि गुरु नानक देव जी के संदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने 500 वर्ष पूर्व थे। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें उनके उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए ताकि समाज में शांति, समरसता और सहयोग की भावना विकसित हो।

(हर्षित चौधरी, कला सनतक, प्रथम वर्ष संत गुरु नानक का चित्र प्रस्तुत करते हुए)

कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने गुरु नानक देव जी के 'निरंकार और सेवा भाव' के सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सच्ची शिक्षा वही है जो मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करे। बेसिक एंड एप्लाइड साइंस की अधिष्ठाता डॉ. रजनी माथुर ने अपने विचारों में बताया कि गुरु नानक देव जी ने विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उनके विचार हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सत्यनिष्ठ और निस्वार्थ बनने की प्रेरणा देते हैं। विशेष शिक्षा विभाग की अधिष्ठाता डॉ. वंदना ठाकुर ने कहा कि गुरु नानक देव जी ने सबको समान दृष्टि से देखने की शिक्षा दी, जो समावेशी शिक्षा की मूल भावना के अनुरूप है।

(श्री राजनारायण शर्मा, सहायक आचार्य विधि विभाग, व्याख्यान देते हुए) (प्रिया चौधरी, छात्रा कला स्नातक, प्रथम वर्ष, विचार साझा करते हुए)

योग विद्यापीठ के अधिष्ठाता डॉ. महादेव सैनी ने इस अवसर पर भक्ति भाव से भरा भजन प्रस्तुत किया, जिससे पूरे वातावरण में आध्यात्मिकता और श्रद्धा का संचार हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने गुरु नानक देव जी के जीवन और शिक्षाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए तथा उनसे संबंधित आकर्षक चित्रकारी प्रदर्शित की, जिससे गुरु नानक जी के संदेशों की कलात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिली। कार्यक्रम के सफ़ल संचालन में डॉ. जितेन्द्र चौधरी, श्री वेद प्रकाश चौधरी एवं सुश्री खुशबू चौधरी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी अतिथियों एवं विद्यार्थियों ने एकता, भाईचारे और सेवा की भावना को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। इस प्रकार गुरु नानक देव जी जयंती का यह आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि नैतिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रेरणादायक और सफ़ल रहा।

## An Educational visit to the Rajasthan Information Commission

The School of Law, University of Technology, Jaipur, successfully organized an educational visit to the Rajasthan Information Commission on 7th November 2025. The visit aimed to provide students with practical exposure to the working of the Commission and to enhance their understanding of transparency, accountability, and the Right to Information frame work. The event commenced with the flag-off ceremony by Dr. Rashmi Jain, President of the University, who highlighted the importance of court and commission visits in legal education. Dr. Anshu Surana, Pro-Chairperson of the University, motivated through massage, the students to gain maximum practical knowledge from such visits. Dr. Ankit Gandhi, Pro-President, shared insights on the importance of experiential learning for aspiring legal professionals. Dr. Anoop Sharma, Registrar of the University, provided full support and guidance and ensured necessary arrangements for the visit.

The visit was organized under the leadership of Dr. Monika Sharma, Dean, School of Law, who coordinated and supervised the entire event. The successful conduct of the visit was made possible with the dedicated support of faculty members Ms. Jyoti Chauhan, Ms.

Pratibha Vashishtha, Mr. Rajnarain Sharma, Mr. Lateef, Mr. Virendra Choudhary and Ms. Himanshi Srivastav.

A special thanks was extended to Mr. Prakash Choudhary, Registrar, Rajasthan Information Commission, for providing this valuable opportunity to the students. During the visit, students observed live case proceedings and gained first-hand experience of how information cases are heard and resolved. Students and faculty members also interacted with Judicial Officers Justice Tika Ram Sharma, Justice Mahendra Pareek, and Justice Sandeep Gupta, who explained the procedural aspects and practical applications of the Right to Information laws. The interaction helped students bridge the gap between theoretical learning and real-world legal practice. The visit proved to be an enriching experience for all participants, reinforcing the School of Law's commitment to practical legal education and holistic learning.

## एनएसएस शाखा ने मनाया वंदे मातरम् के 150 वर्ष का उत्सव

दिनांक 07 नवंबर 2025 को हमारे राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के 150 गौरवशाली वर्ष के ऐतिहासिक अवसर पर राजस्थान सरकार द्वारा सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने इस भव्य आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। एनएसएस नोडल अधिकारी यश यादव तथा विधि विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर लतीफ के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने हजारों प्रतिभागियों के साथ मिलकर वंदे मातरम् से प्रेरित देशभक्ति और एकता की भावना को नमन किया।

एनएसएस नोडल अधिकारी यश यादव ने बताया कि- "यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह और अनुशासन के साथ इस कार्यक्रम में भाग लेकर राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया।" प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने कहा कि- "वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति और मातृभूमि के प्रति समर्पण का प्रतीक है।" वंदे मातरम् केवल एक ऐतिहासिक गीत नहीं, बल्कि यह भारत के आत्मसम्मान, त्याग और एकता की भावना का अमर प्रतीक है। इस गीत की गूंज हमें यह विश्वास दिलाती है कि भारत की प्रगति तभी संभव है जब हम सब एक स्वर में 'वंदे मातरम्' कहें।" उप-कुलपति डॉ. अंकित गांधी ने कहा कि- "आज की युवा पीढ़ी को 'वंदे मातरम्' के अर्थ को समझते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। यही सच्चा सम्मान है हमारे राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीत का।" कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- "ऐसे आयोजन युवा पीढ़ी में राष्ट्रभक्ति की भावना को और सशक्त बनाते हैं तथा उन्हें अपने देश की गौरवशाली विरासत से जोड़ते हैं।" विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि- "वंदे मातरम् हमें यह संदेश देता है कि जब हम एकजुट होते हैं, तो कोई भी चुनौती असंभव नहीं रहती।" ऐसे आयोजन हमें यह स्मरण कराते हैं कि हमारी एकता, संस्कृति और शाश्वत मूल्य ही हमारे राष्ट्र की वास्तविक शक्ति हैं, जो हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर इस यादगार आयोजन के लिए राजस्थान सरकार का हृदय से आभार व्यक्त करती है।"

# वैश्विक सम्मेलन (GCIRESF-2025) का सफ़ल आयोजन

दिनांक 20 नवंबर 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "नवाचार, अनुसंधान और शिक्षा पर आधारित सतत भविष्य के निर्माण हेतु विश्व स्तर पर होने वाला सहयोग और विचारों का संगम" (GCIRESF–2025) का शोध विभाग एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक सम्मेलन का सफ़ल आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि विभिन्न देशों से आए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रेसिडेंट डॉ. रश्मि जैन ने विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित अकादमिक उपलब्धियों का परिचय देते हुए सम्मेलन के उद्देश्य और महत्ता पर प्रकाश डाला । अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा- "स्थाई भविष्य के निर्माण के लिए नवाचार, अनुसंधान और शिक्षा पर वैश्विक संगम एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी विशेष जोर दिया।

इसके पश्चात उप-कुलपति डॉ. अंकित गांधी ने सभी प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए कहा- "यह मंच वैश्विक सहयोग और ज्ञान साझा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित विकास और समृद्ध भविष्य का निर्माण किया जा सके। उद्घाटन समारोह के बाद दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, पहले सत्र में अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गईं। एंटोनेट लेयून (कनाडा) ने 'सुसंगत

हृदय की बुद्धिमत्ता : द न्यूरोजॉय शिफ्ट' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया तथा यू. एस. ए. से आई प्रतिभागी एलिसन साल्ट्ज़मैन ने 'क्वांटम मेडिटेशन के लाभ' विषय पर पत्र वाचन किया।

दूसरे तकनीकी सत्र में सेंधिल कुमार ने एकत्व चेतना में 'क्वांटम टनलिंग और अवरोध' विषय पर अपने विचार रखे और अंकुर तिवारी (उत्तर प्रदेश, भारत) ने 'पंचकोश फ्रेमवर्क में क्वांटम योग लागू करने के पाँच मुख्य आधार', तथा शिल्पा सुगतहन (हरियाणा, भारत) ने 'मानव मस्तिष्क की स्वतंत्रता की डिग्री को बढ़ाकर उच्च क्वांटम रचनात्मकता' प्राप्त करने पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया, मारिया फिलीपोज़ (गोवा, भारत) ने सृजनात्मकता : मिथक और विधि के शोध पत्र उल्लेखनीय रहे। सभी वक्ताओं ने सम्मेलन की थीम से संबंधित प्रभावशाली, शोध-आधारित तथा प्रेरणादायक प्रस्तुतियाँ दीं, जिनसे प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों, वैश्विक दृष्टिकोणों और सतत विकास के लिए आवश्यक नवाचारों को समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम के समापन सत्र में डॉ. अंशु सुराना ने अपने प्रेरणादायक संदेश में कहा- "नवाचार की शक्ति को पहचानें, अनुसंधान के माध्यम से समाधान खोजें, और शिक्षा के द्वारा एक स्थायी भविष्य का निर्माण करें।" कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री चारु दुबे, सहायक आचार्य, बेसिक एंड एप्लाइड साइंस द्वारा किया गया। अंत में डॉ. रजनी माथुर, संयोजक, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया, जिसके साथ ही यह महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ।

## ‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) एवं नवाचार के माध्यम से उद्यमिता’ विषय पर सेमिनार आयोजित

दिनांक 21 नवंबर 2025 को ‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बौद्धिक संपदा अधिकार एवं नवाचार के माध्यम से उद्यमिता’ विषय पर एक महत्वपूर्ण सेमिनार का सफ़ल आयोजन किया गया। यह आयोजन इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल (IIC) द्वारा किया गया । यह सेमिनार कृषि विभाग के अधिष्ठाता डॉ. एस. एस. यादव के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। वक्ता हिमांशु यादव ने अपने प्रभावी संचालन, उत्साह और उत्कृष्ट समन्वय कौशल के साथ पूरे सत्र का सफ़ल नेतृत्व किया । उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता में उद्यमिता के नए अवसरों पर विस्तार से चर्चा की तथा आईपीआर एवं स्टार्टअप इनोवेशन की प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं । सत्र के दौरान छात्रों की जिज्ञासाओं का समाधान करने हेतु एक इंटरैक्टिव चर्चा आयोजित की गई, जिसमें युवाओं को स्टार्टअप एवं नवाचार की दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किए गए । डॉ. रश्मि जैन (प्रेसिडेंट) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज वैश्विक उद्योगों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है, साथी ही उन्होंने छात्रों को एआई आधारित नवाचारों और स्टार्टअप विचारों पर काम करने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने कहा कि भविष्य उन्हीं का सुदृढ़ होगा जो तकनीक को समझकर रचनात्मकता के साथ उसका उपयोग करेंगे ।

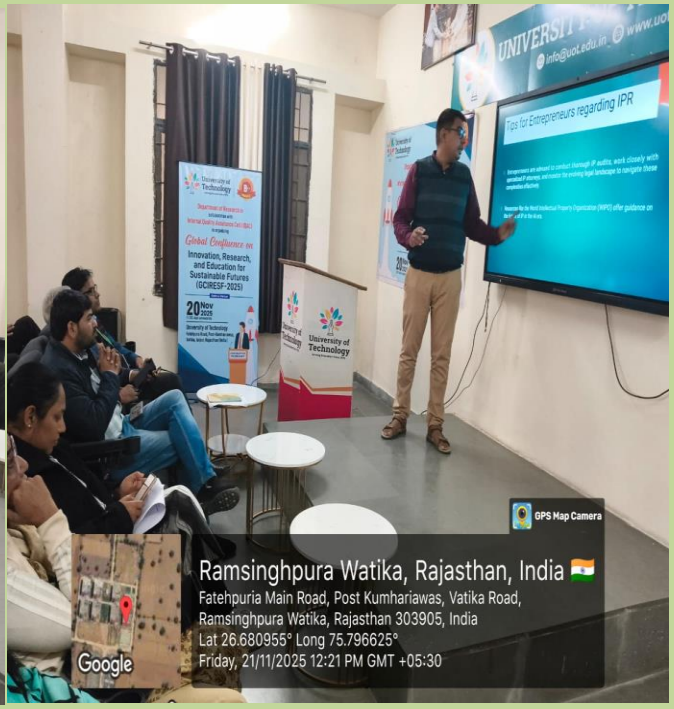

डॉ. अंकित गांधी (वाइस प्रेसिडेंट) ने बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी भी नवीन विचार की सुरक्षा आवश्यक है। उन्होंने छात्रों को अपने नवाचारों का संरक्षण करने और उन्हें उद्यमिता के माध्यम से समाजोन्मुख योगदान में बदलने का आह्वान किया। डॉ. अंशु सुराना (उप-कुलाध्यक्ष) ने अपने संदेश में कहा कि नवाचार और शोध तभी सार्थक बनते हैं जब उनका उपयोग सही दिशा में किया जाए। उन्होंने एआई और आईपीआर को रोजगार सृजन, तकनीकी विकास और शोध विस्तार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। सेमिनार का सफ़लतापूर्वक समापन इंस्टीट्यूशन इनोवेशन कॉन्सिल के संयोजक डॉ. सागर कुमार द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

## लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल

31 अक्तूबर 1875 को गुजरात के खेड़ा जिले के नाडियाड में एक किसान परिवार में जन्मे सरदार वल्लभ भाई पटेल को एकता की मिसाल कहा जाता है, क्योंकि देश की एकता को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने देश को एकजुट करने में सदैव महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर मजबूत और एकीकृत भारत के निर्माण में उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। जिस समय देश आजाद हुआ, तब यह कई छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था, जिन्हें एकजुट करना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य था। आजाद भारत को एकजुट करने का श्रेय पटेल की राजनीतिक और कूटनीतिक क्षमता को ही दिया जाता है। भारत के राजनीतिक एकीकरण के लिए सरदार पटेल के इसी अविस्मरणीय योगदान को चिरस्थायी बनाए रखने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 31 अक्तूबर 2014 से प्रतिवर्ष उनकी जन्मतिथि 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की गई, तभी से सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह देशवासियों को स्मरण कराता है कि सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत के निर्माण में 562 रियासतों को एकजुट करने और आधुनिक भारत की नींव रखने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

**लकी वर्मा**
कला स्नातक, प्रथम वर्ष
मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विभाग